भूखा सेप्टोपस

सत्यजीत रे

दरवाज़े की घण्टी फिर बज उठी। मैं झल्ला उठा। दोपहर से ऐसा चौथी बार हुआ था। ऐसे में कोई काम कैसे कर सकता है? कार्तिक भी सुबह से गायब था।

मुझे लिखते-लिखते उठना पड़ा। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला, सामने कान्ति बाबू नज़र आए। मुझे उनके आने की बिलकुल भी उम्मीद न थी।

"वाह, क्या बात है, आइए, आइए!" मैंने उन्हें घर के अन्दर आमंत्रित करते हुए कहा।

"मुझे पहचाना?"

"हाँ, कुछ-कुछ।"

मैं उन्हें भीतर लाया। बीते दस सालों में उनका हुलिया काफी बदल गया था। उन्हें देखकर कौन यकीन करेगा कि यही शख्स 1950 के दशक में असम के जंगलों में घूमा करता था। जब मैं उनसे मिला था, तब वे करीब 50 साल के रहे होंगे, लेकिन उनका एक बाल तक सफेद नहीं था। उनका उत्साह देखकर तो जवान आदमी भी शर्मा जाए।

"आपको ठण्ड लग रही है? मैं खिड़की बन्द कर देता हूँ। इस बार कलकत्ता में ठण्ड..."

"नहीं, नहीं।" कान्ति बाबू ने मुझे बीच में ही टोकते हुए कहा, "मुझे कभी-कभार कँपकँपी का दौरा उठ जाता है। अब उमर हो चली है। बुढ़ापे में ऐसा होता ही है।"

कई बातें थीं जिनके बारे में मैं उनसे पूछना चाहता था। इतने में कार्तिक भी आ गया था। मैंने उससे चाय बनाकर लाने को कहा।

"मैं देख रहा हूँ कि ऑर्किड में तुम्हारी दिलचस्पी अब भी बनी हुई है।" कान्ति बाबू ने कहा।

मैंने खिड़की पर एक गमले में ऑर्किड़ रख रखा था। इसे सालों पहले कान्ति बाबू ने ही दिया था, लेकिन अब उसमें मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं बची थी। कान्ति बाबू ने ही मुझमें पौधों के लिए प्यार पैदा किया था। लेकिन उनके विदेश जाते ही पौधों में मेरी रुचि खत्म हो गई थी। दूसरे शौक भी धीरे-धीरे हाशिए पर चले गए। अब केवल एक ही शौक बचा रह गया था - लेखन का।

जैसे ही कान्ति बाबू सोफे पर बैठे, वे काँपने लगे।

"मुझे अचानक तुम्हारा एक उपन्यास देखने का मौका मिला। तुम्हारे प्रकाशक ने ही मुझे तुम्हारा पता दिया है। दरअसल, मेरे यहाँ आने के पीछे एक खास मकसद है।" कान्ति बाबू ने कहा।

"बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ? लेकिन पहले यह बताइए कि इतने साल तक आप कहाँ थे और इंडिया कब लौटे?"

"मैं अमेरिका में था। दो साल पहले ही यहाँ आया हूँ। इन दिनों मैं बारासात में रह रहा हूँ।"

"बारासात?"

"मैंने वहाँ एक मकान भी खरीद लिया है।"

"क्या उसमें बगीचा है?"

"हाँ।"

"और ग्रीनहाउस भी?"

इससे पहले कान्ति बाबू जिस मकान में रहा करते थे, उसमें एक शानदार ग्रीनहाउस बना हुआ था। उसमें दुर्लभ पौधों का क्या संग्रह था। 60-65 प्रकार के तो ऑर्किड ही थे। कोई भी उन पौधों के साथ दिनभर बिता सकता था।

कान्ति बाबू पल भर को रुके और फिर बोले, "हाँ, ग्रीनहाउस भी है।"

"यानी पेड़-पौधों में आपकी दिलचस्पी अब तक है?"

"हाँ।"

वे कमरे की एक दीवार को घूरे जा रहे थे। मैंने अपनी नज़रें वहीं घुमा दीं। वहाँ रॉयल बंगाल टाइगर की खाल लटक रही थी।

"पहचाना इसे?" मैंने पूछा।

"यह तो वही है, है ना?"

"हाँ, बिलकुल, उसके कान के पास छेद देख रहे हैं?"

"क्या निशाना था तुम्हारा! क्या वो अब भी उतना ही सटीक है?"

"पता नहीं, शिकार छोड़े सालों हो गए हैं।"

"क्यों?"

"मैं बहुत जानवर मार चुका हूँ। अब मुझे यह अच्छा नहीं लगता।"

"यानी तुमने मांस खाना भी छोड़ दिया?" कान्ति बाबू ने शायद व्यंग्य में पूछा।

"नहीं।"

"तो फिर? अगर किसी शेर को मारकर उसकी खाल से अपने घर को सजाना खराब बात है तो किसी बकरे या मुर्गी का मांस खाना क्या अच्छी बात है?"

तब तक कार्तिक चाय लेकर आ गया था। मैंने चाय की चुस्कियों के साथ कहा, "तो फिर शाकाहारी होना शायद बेहतर होगा।"

"ऐसा कौन कहता है? क्या तुम सोचते हो कि पत्तियों व सब्ज़ियों में जीवन नहीं होता?"

"हाँ, उनमें जीवन होता है, लेकिन वैसा नहीं जैसा जीव-जन्तुओं में होता है। पेड़-पौधे और जन्तु एक-जैसे नहीं हो सकते।"

“तो तुम्हें लगता है कि ये दोनों एकदम अलग-अलग होते हैं?”

“तो क्या नहीं होते? उनमें अन्तर तो साफ नज़र आता है। पेड़-पौधे चल नहीं सकते, अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं कर सकते। आप भी शायद मेरी इस बात से सहमत होंगे?”

कान्ति बाबू कुछ कहना चाहते थे, लेकिन फिर रुक गए। उन्होंने चाय की अन्तिम चुस्की ली और फिर मेरी तरफ तीखी निगाहों से देखते हुए धीरे-से बोले, “परिमल, मैं यहाँ से 21 किलोमीटर दूर रहता हूँ। इस 58 साल की उम्र में भी मैंने तुम्हारा पता ढूँढ़ने के लिए इतनी मशक्कत की। तुम शायद समझते ही होगे कि बगैर किसी खास मकसद के तो मैं इतनी माथा-पच्ची करता नहीं।”

मैं झेंप गया। कान्ति बाबू की बात एकदम सही थी।

वे आगे बोले, “परिमल, मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत है।”

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें मेरी ऐसी क्या ज़रूरत पड़ गई!!

“तुम्हारी बन्दूक अब भी तुम्हारे पास है या उसे ठिकाने लगा चुके हो?”

मैंने अचरज से कहा, “हाँ है, लेकिन उसमें जंग लग गई होगी।”

“क्या तुम उसे लेकर कल मेरे घर आ सकते हो?”

मैंने ध्यान से उनके चेहरे को देखा। वे वाकई गम्भीर थे।

“और हाँ, गोलियाँ भी साथ लेते आना।”

“ज़रूर, लेकिन आपको इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई? क्या आपके घर के आस-पास जंगली जानवर हैं या चोर-लुटेरों का आतंक है?”

“जब तुम मेरे घर आओगे तो तुम्हें सब कुछ बता दूँगा।”

कान्ति बाबू ने अपने घर का पता बताते हुए पूछा, “तुम्हारे पास कार तो होगी?”

“मेरे पास तो नहीं है, लेकिन मेरे एक दोस्त के पास है।”

“कौन दोस्त?”

“उसका नाम अभिजीत है। वह मेरे साथ कॉलेज में था।”

“कैसा आदमी है? क्या मैं उसे जानता हूँ?”

“शायद नहीं, लेकिन आप उस पर भरोसा कर सकते हैं।”

“ठीक है, तो उसे भी साथ लेते आना, लेकिन सूर्यास्त के पहले ज़रूर आ जाना।” इतना कहकर कान्ति बाबू घर से निकल गए।

* * *

मैंने सारी बात अभिजीत को बताई।

“चलो, वैसे भी हमें कहीं बाहर गए एक लम्बा अर्सा हो गया है, लेकिन यह तो बताओ, आखिर यह आदमी है कौन और क्या चाहता है?” अभिजीत बोला।

"भई, यह तो मुझे भी नहीं पता कि उनका मकसद क्या है।"

"फिर यह तो बता दो कि वे हैं कौन?"

"कान्ति चरण चटर्जी। किसी समय वे स्कॉटिश चर्च कॉलेज में वनस्पतिशास्त्र के प्रोफेसर हुआ करते थे। फिर उन्होंने अध्यापन छोड़ दिया और जगह-जगह घूमकर दुर्लभ प्रजातियों के पौधों की तलाश में जुट गए। उन्होंने कई अनुसन्धान किए हैं और उन पर अनेक शोध-पत्र भी छप चुके हैं।"

"उनसे तुम्हारी मुलाकात कहाँ हुई?"

"असम के काज़ीरंगा में। मैं वहाँ बाघ के शिकार की उम्मीद में गया था। वे तब नेपेंथस की तलाश में थे।"

"नेपेंथस? यह भला क्या बला है?"

"यह एक पौधे का बॉटेनिकल नाम है। सुराही के आकार का यह पौधा असम के जंगलों में पाया जाता है और कीट-पतंगों पर जीता है।"

"कीट-पतंगे खाने वाला पौधा? ऐसा कैसे हो सकता है?"

"लगता है तुमने वनस्पतिशास्त्र बिलकुल नहीं पढ़ा है।"

"हाँ, कभी नहीं।"

"खैर, काज़ीरंगा से लौटकर उनसे एक-दो बार मुलाकात हुई। फिर वे अमेरिका चले गए। तब से आज ही मेरी उनसे मुलाकात हुई।"

"इतने साल वे क्या करते रहे?"

"मुझे नहीं मालूम, लेकिन कल शायद पता चल जाएगा।"

* * *

अगले दिन हम कान्ति बाबू के घर की ओर रवाना हुए। मेरे और अभिजीत के अलावा उसका कुत्ता बादशाह भी हमारे साथ था। बादशाह रामपुर प्रजाति का भूरा कुत्ता था, इतना बड़ा और भारी कि कार की पिछली सीट पर बस वही बैठा हुआ था। और खिड़की से हरे-भरे खेतों को निहार रहा था।

मैं बादशाह को साथ ले जाने के पक्ष में नहीं था, लेकिन अभिजीत ने मेरे सुझाव का विरोध किया, "मुझे

अब तुम्हारे निशाने पर भरोसा नहीं रहा है। तुमने सालों से अपनी राइफल को छुआ तक नहीं है। ऐसे में अगर कोई खतरा होता है तो बादशाह काम आएगा। वैसे तुम भी जानते हो कि वह कितना बहादुर है।"

कान्ति बाबू का घर ढूँढ़ने में हमें ज़्यादा परेशानी नहीं हुई। हम दोपहर ढाई बजे उनके घर पहुँच गए। कान्ति बाबू ने हमारा स्वागत किया, लेकिन बादशाह को लाना शायद उन्हें पसन्द नहीं आया।

"क्या यह प्रशिक्षित कुत्ता है?" उन्होंने अभिजीत से पूछा।

"हाँ, यह मेरा कहा मानता है, लेकिन दूसरे कुत्तों को देखकर यह शायद भड़क जाए। क्या आपके पास कोई कुत्ता है?"

"नहीं, लेकिन कृपया इसे बैठक कक्ष की खिड़की से बाँध दीजिए।"

अभिजीत ने मेरी ओर कनखियों से देखा और फिर वही किया जो कान्ति बाबू चाहते थे। बादशाह ने इसका हलका-सा विरोध किया, लेकिन परिस्थिति को समझकर चुप हो गया।

हम बरामदे में कुर्सियों पर आराम-से बैठ गए। मैं समझ नहीं पा रहा था कि इतनी शान्त व मनोहारी जगह पर भला क्या खतरा हो सकता है। इस शान्ति में आवाज़ कहीं आ रही थी तो बस पक्षियों के कलरव की, लेकिन वह भी कानों में मिश्री घोल रहा था। मुझे राइफल उठाकर लाना और उसे एक दीवार से टिकाकर रखना बड़ा ही मूर्खतापूर्ण लगा।

अभिजीत मूलतः शहरी व्यक्ति है। और वह बहुत देर तक चुप नहीं बैठ सकता। वह बेचैनी महसूस करने लगा और बोल उठा, "परिमल ने बताया था कि एक बार आप असम के जंगलों में कुछ विशेष प्रजाति के पौधे तलाश रहे थे कि बाघ ने आप पर हमला कर दिया। और आप बाल-बाल बच गए थे।"

अभि को अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने की आदत है। मुझे लगा कि इस बात से कहीं कान्ति बाबू नाराज़ न हो जाएँ, लेकिन उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "तुम्हारी नज़र में जंगल में खतरा मतलब शेर या बाघ, लेकिन मेरा आज तक किसी शेर से आमना-सामना नहीं हुआ। बस एक बार एक जोंक ने ज़रूर काटा था। उससे ज़्यादा कुछ नहीं।"

"तो आपको अपना पौधा मिला या नहीं?"

"कौन-सा पौधा?"

"वही सुराहीदार या जो भी आप कहते हैं।"

"ओ, तुम्हारा मतलब नेपेंथस, बिलकुल। वह मेरे पास है। तुम्हें ज़रूर दिखाऊँगा। उस मांसभक्षी पौधे को छोड़कर मैंने अब अन्य पौधों में दिलचस्पी लेना छोड़ दिया है।"

फिर वे अन्दर चले गए। हम दोनों यह सोचकर एक-दूसरे का मुँह

ताकते रहे कि भला मांस खाने वाला पौधा! इतनी देर में कान्ति बाबू वापस लौटे। उनके हाथ में एक बोतल थी जो टिड्डों, गुबरेलों और कई प्रकार के कीट-पतंगों से भरी हुई थी। हवा जाने के लिए बोतल के कॉर्क में एक छेद बना हुआ था।

"खाने का समय हो गया है, आओ मेरे साथ," कान्ति बाबू इतना बोलकर अपने बंगले के एक कोने में बने टीन शेड की ओर चल दिए। हम भी उनके पीछे-पीछे चल पड़े। वहाँ काँच के बरतन में किस्म-किस्म के पौधे थे। हर पौधा अपने आप में अनूठा था। वैसे पौधे मैंने आज से पहले कभी नहीं देखे थे।

"इनमें नेपेंथस को छोड़कर कोई भी पौधा हमारे देश में नहीं पाया जाता। यह नेपाल का है और यह अफ्रीका का। बाकी सभी मैंने मध्य अमेरिका से हासिल किए हैं।"

अभिजीत यह सोचकर हैरत में था कि आखिर हमारी मिट्टी में ये पौधे ज़िन्दा कैसे रह जाते हैं।

"इनका मिट्टी से कोई लेना-देना नहीं है।" कान्ति बाबू बोले।"

"कैसे?"

"उन्हें पोषण मिट्टी से नहीं मिलता। जैसे हम मनुष्य खाने पर ज़िन्दा रहते हैं, वैसे ही ये पौधे भी कहीं भी रह सकते हैं, बस उन्हें सही भोजन मिलता रहे।"

कान्ति बाबू एक बरतन के पास रुक गए। उसमें एक अजीब तरह का पौधा था जिसकी दो इंच लम्बी हरी पत्तियों पर सफेद रंग के दाँते बने हुए थे। उस काँच के बरतन में बोतल के मुँह के आकार का एक गोल दरवाज़ा भी बना हुआ था। कान्ति बाबू ने वह छोटा-सा गोल दरवाज़ा खोला और झट बोतल से कॉर्क हटाकर उसे काँच के बरतन के छेद से सटा दिया। जैसे ही एक कीड़ा बोतल से बाहर निकला, कान्ति बाबू ने तुरन्त बोतल हटाकर वह दरवाज़ा बन्द कर दिया। वह कीड़ा उड़कर एक पत्ती

पर बैठ गया। पत्ती ने तुरन्त अपने आप को मोड़कर उस कीड़े को दबा लिया। अब कीड़ा उसकी ऐसी गिरफ्त में था कि उसके लिए बच निकलना असम्भव था।

अचरज के साथ अभि बोला, "लेकिन क्या कोई कीड़ा हमेशा पत्ती पर बैठेगा ही?"

"बिलकुल, ये ऐसी गन्ध छोड़ते हैं जिससे आकर्षित होकर कीट-पतंगे उड़कर उनकी पत्तियों पर बैठ जाते हैं।"

मैं उस पौधे को मुग्धभाव से देखे जा रहा था। वह एक ऐसी छिपकली से कम नज़र नहीं आ रहा था जिसने अपने शिकार को जकड़ रखा हो।

अगले काँच के बरतन में रखे पौधे की लम्बी-लम्बी पत्तियाँ थीं और हर पत्ती से एक थैली के आकार की कोई चीज़ लटक रही थी। मैंने इससे पहले उसे केवल चित्रों में देखा था।

"यही नेपेंथस या सुराहीदार पौधा है। इसे बहुत ज़्यादा भूख लगती है। मैंने जब इसे पहली बार पाया था तो उसकी इस थैली में मुझे एक चिड़िया के अवशेष मिले थे।

"अब यहाँ यह क्या खाता है?" अभिजीत ने पूछा।

"तिलचट्टे, तितलियाँ, इल्लियाँ जैसी चीज़ें आराम-से खा लेता है। जब एक बार उसे चूहा दिया गया तो उसे भी हज़म करने में इसने कोई देर नहीं की। लेकिन अधिक खाना इसके लिए घातक हो सकता है। यह बहुत पेटू होता है और अपने खाने की स्वाभाविक सीमा के बारे में शायद जानता ही नहीं।"

हम एक दूसरे बरतन के सामने से गुज़रते हुए उन विचित्र पौधों को आश्चर्य के साथ देखे जा रहे थे। बटरवॉर्ट, सनड्यू, ब्लैडरवॉर्ट इत्यादि को तो इसलिए पहचान गया क्योंकि उन्हें मैंने तस्वीरों में देख रखा था। उनके अलावा भी ऐसे कई पौधे थे जिन्हें मैं पहली बार देख रहा था।

हम टीन शेड से बगीचे में आ गए। तब तक शाम के चार बज चुके थे।

"इनमें से कई पौधों के बारे में पहले भी लिखा जा चुका है, लेकिन मेरे संग्रह में एक पौधा ऐसा भी है जो सबसे विचित्र है और उसके बारे में तब तक दुनिया को पता नहीं चलेगा, जब तक कि मैं नहीं बताऊँगा। उसे तुम्हें ज़रूर देखना चाहिए। तब पता चलेगा कि मैंने तुम्हें यहाँ क्यों बुलाया है।" कान्ति बाबू इतना कहकर एक दूसरे टीन शेड की ओर बढ़ चले। हम भी उनके पीछे-पीछे चले। वह शेड किसी फैक्ट्री की तरह नज़र आ रहा था। उसमें एक दरवाज़े के आजू-बाजू में दो खिड़कियाँ बनी हुई थीं। दरवाज़े पर ताला लटका था। कान्ति बाबू ने एक खिड़की को खोलकर भीतर झाँका। फिर हमसे भी ऐसा ही करने को कहा। मैंने और अभि ने वैसा ही किया।

कमरे की पश्चिमी दीवार से सटे एक काँच के बरतन में मद्धिम प्रकाश में कुछ नज़र तो आ रहा था, लेकिन वह कोई पौधा कम, एक विशालकाय, विचित्र-सा जानवर ज़्यादा लग रहा था। उसका तना करीब आठ फीट ऊँचा था। मोटी-मोटी शाखाएँ किसी जानवर के सिर पर लगे एंटिना जैसी दिखाई दे रही थीं। ऐसी कुल सात शाखाएँ थीं। अचानक मेरी नज़र ज़मीन पर पड़ी। मेरे शरीर में झुरझुरी-सी दौड़ गई। ज़मीन पर जगह-जगह मुर्गियों के पंख छितरे पड़े थे।

मुझे नहीं पता कि हम कितनी देर तक यूँ ही हक्के-बक्के खड़े रहे। तभी कान्ति बाबू ने हमारी समाधि तोड़ी,

"यह पेड़ अभी नींद में है, लेकिन अब इसके उठने का समय हो गया है।"

अभिजीत को भरोसा नहीं हो रहा था कि यह कोई पेड़ ही है। इस पर कान्ति बाबू ने कहा, "चूँकि यह ज़मीन से उगा है, इसलिए इसे पेड़ नहीं तो और क्या कहेंगे! लेकिन यह भी सच है कि इसका बर्ताव किसी पेड़ जैसा बिलकुल नहीं है। इसके लिए शब्दकोष में भी कोई शब्द नहीं है।"

"तो फिर आप इसे किस नाम से पुकारते हैं?"

"सेप्टोपस।"

हम वापस बगीचे की ओर चल दिए। मैंने उनसे पूछा कि उन्हें यह विचित्र पौधा कहाँ मिला।

"मध्य अमेरिका में निकारागुआ झील के पास फैले घने जंगलों में।" कान्ति बाबू ने बताया।

"आपने इसे कैसे हासिल किया?"

"मुझे यह तो पता था कि यह उस इलाके में होता है। इसलिए मैं सबसे पहले निकारागुआ गया। वहाँ से आगे ग्वाटेमाला की तरफ जाने पर स्थानीय लोगों के मुँह से इस पेड़ के बारे में सुना। वे उसे शैतान का वृक्ष कहते थे। ढूँढ़ने पर मुझे ऐसे कुछ वृक्ष मिल गए। तुम विश्वास नहीं करोगे, मैंने उन्हें बन्दर तक खाते देखा है। काफी ढूँढ़ने के बाद मुझे उसी प्रजाति का एक इतना छोटा पौधा मिल गया जिसे मैं साथ ला सकता था। देखो, अब वो कितना बड़ा हो गया है।"

"यह खाता क्या है?"

"कुछ भी दो, हज़म कर जाता है। इसे रोज़ाना दो मुर्गियाँ या एक छोटी बकरी देनी पड़ती है, लेकिन मुझे लगता है कि अब इसकी भूख बढ़ती जा रही है। कल तो गज़ब हो जाता। मेरा नौकर प्रयाग उसे रोज़ की तरह मुर्गियाँ खिला रहा था और मैं अपने कमरे में बैठा किताब के लिए कुछ लिख रहा था। अचानक मैंने प्रयाग की चीख सुनी। मैं तुरन्त दौड़कर वहाँ पहुँचा। क्या भयानक दृश्य मेरी आँखों के सामने था! सेप्टोपस की एक शाखा ने प्रयाग के दाहिने हाथ को बुरी तरह से जकड़ रखा था। दूसरी शाखा उसकी ओर ललचाती हुई बढ़ रही थी।"

"मैंने झट-से अपनी छड़ी सेप्टोपस की शाख पर दे मारी और प्रयाग को दोनों हाथों से खींचकर बचा लिया। अब चिन्ता की बात यह है कि वह प्रयाग के मांस का एक टुकड़ा मेरी आँखों के सामने गटक चुका है।"

हम फिर से बरामदे में पहुँचे। कान्ति बाबू रुमाल से पसीना पोंछते हुए बोले, "कल की घटना के बाद सेप्टोपस को मनुष्य के मांस का भी स्वाद लग गया है। ऐसे में मुझे लगता है कि अब मेरे पास उसे मारने के अलावा और कोई रास्ता नहीं बचा है। मैंने उसे ज़हर देकर मारने की कोशिश की थी, लेकिन वह चालाक निकला। उसने शाख से छूकर ही खाने को दूर फेंक दिया। अब उसे

बन्दूक की गोली से ही मारा जा सकता है। तो परिमल, अब तुम समझ ही गए होगे कि मैंने तुम्हें किसलिए बुलाया था।”

मैंने कुछ देर सोचने के बाद पूछा, “क्या आपको लगता है कि वह गोली से मर सकता है?”

“पता नहीं वह मर पाएगा या नहीं, लेकिन यह तो पक्का है कि उसमें दिमाग है। वह सोच सकता है। मैं उसके पास कई बार जा चुका हूँ, लेकिन उसने मुझ पर आज तक हमला नहीं किया, क्योंकि उसे लगता है कि मैं उसका मालिक हूँ। लेकिन प्रयाग पर उसने हमला इसलिए किया क्योंकि वह उसे अकसर परेशान करता रहा है। भोजन देते समय उसके साथ छेड़खानी करने की उसकी आदत रही है। इसलिए उसमें दिमाग तो है और वह उसके तने के ऊपरी हिस्से पर होना चाहिए। इसलिए तुम्हें वहीं पर निशाना साधना है।”

कुछ देर तक हम इसी उधेड़बुन में बैठे रहे। कान्ति बाबू चाय ले आए थे। जब तक हमने चाय पी, तब तक सेप्टोपस भी जाग चुका था।

* * *

इधर कुछ समय से बादशाह लगातार बेचैन हुआ जा रहा था। अचानक वह ज़ोर-ज़ोर-से भौंकने लगा। मैं और अभि तुरन्त उसके पास पहुँचे कि आखिर मामला क्या है। बादशाह अपनी चेन तुड़ाकर भागने की कोशिश कर रहा था। अभि ने उसे पुचकारकर शान्त करने की कोशिश की। तभी एक अजीब-सी गन्ध हर ओर फैल गई। वह गन्ध उसी टीन शेड से आ रही थी, जिसमें सेप्टोपस बन्द था। कान्ति बाबू तुरन्त हमारे पास आए, सेप्टोपस जाग गया है।

"यह गन्ध कैसी है?" मैंने पूछा।

"सेप्टोपस अपने शिकार को आकर्षित करने के लिए यह गन्ध छोड़ता है..."

कान्ति बाबू अपनी बात खत्म भी नहीं कर पाए थे कि बादशाह चेन तुड़ाकर उस तरफ भाग निकला, जिधर से वह गन्ध आ रही थी।

"सत्यानाश..." कहते हुए अभिजीत बादशाह के पीछे भागा।

मैं भी राइफल लेकर तुरन्त अभिजीत के पीछे भागा। तब तक बादशाह खिड़की से कूदकर अन्दर जा चुका था। कान्ति बाबू भी वहाँ पहुँच चुके थे। हम ताला खोलकर अन्दर पहुँचते तब तक सेप्टोपस बादशाह को अपनी जकड़ में ले चुका था।

"एक भी कदम आगे मत बढ़ना, परिमल शूट करो।" कान्ति बाबू चिल्लाए।

लेकिन इससे पहले कि मैं निशाना साधता, अभिजीत कान्ति बाबू की चेतावनी को अनसुना कर आगे बढ़ चुका था।

उसने सेप्टोपस की शाखाओं से बादशाह को मुक्त करवा लिया था।

अरे, यह क्या! अब सेप्टोपस की शाखाएँ अभिजीत की ओर बढ़ चली थीं। अगले कुछ ही पलों में अभि उनकी जकड़ में था। मानव मांस का चस्का लगने के बाद सेप्टोपस अभिजीत पर ललचा रहा था।

कान्ति बाबू फिर चीखे, "शूट करो, परिमल, शूट करो। उसके सिर पर मारो।"

मैंने सेप्टोपस पर निगाहें टिकाईं। तब तक उसके तने के ऊपरी भाग का ढक्कन खुल चुका था। शाखाएँ अभिजीत को छेद के अन्दर ले जा रही थीं। अभि का चेहरा सफेद पड़ चुका था। आँखें फूल गई थीं।

मैंने शान्त भाव से निशाना साधा और राइफल का घोड़ा दबा दिया। सेप्टोपस के सिर पर बने दो गोल घेरों के ठीक बीच में गोली जा घुसी। निशाना बिलकुल ठीक लगा। खून का फव्वारा बह निकला। शाखाएँ अचानक ढीली पड़ गईं। अभि पर उनकी पकड़ भी ढीली पड़ गई।

इस घटना को हुए चार माह बीत चुके हैं। मैंने अपने अधूरे उपन्यास पर फिर से काम शुरू कर दिया है।

बादशाह को बचाया नहीं जा सका। अभि की भी दो पसलियाँ टूट

गई थीं। दो महीने तक प्लास्टर बँधे रहने के बाद अब वह स्वस्थ है।

कान्ति बाबू कल ही घर आए थे। बता रहे थे कि वे अब सभी मांसाहारी पौधों से मुक्ति पाना चाहते हैं। “अब मैं कुछ घरेलू पौधों पर शोध करना चाहता हूँ। अगर तुम चाहो तो उनमें से कुछ पौधे ले सकते हो। कम-से-कम घर कीट-पतंगों से बचा रहेगा।

“नहीं, धन्यवाद।” मैं बोला। “मुझे कीट-पतंगों से बचने के लिए उनकी ज़रूरत नहीं है। आप उन्हें फेंक सकते हैं।

कैलेंडर के पीछे छिपी छिपकली भी हलकी मुस्कान के साथ शायद यही कह रही थी।

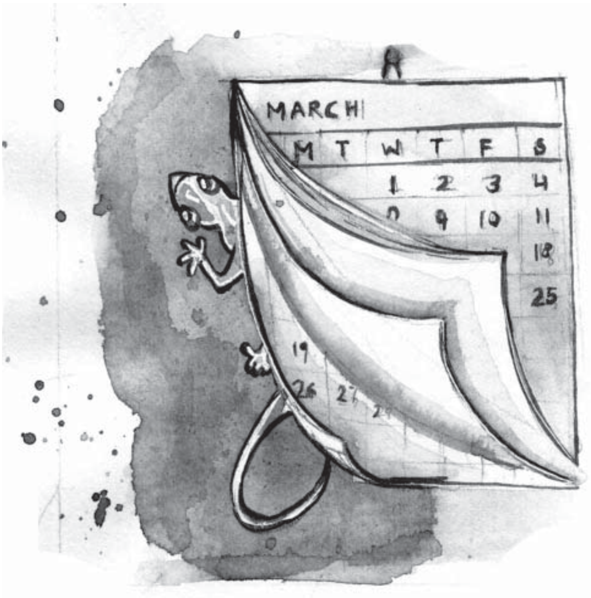

सत्यजीत रे: (2 मई 1921 - 23 अप्रैल 1992): बीसवीं सदी के सिनेमा के महान बांग्ला फिल्म निर्माता-निर्देशक थे। वे उपन्यासकार, प्रकाशक, चित्रकार, ग्राफिक डिज़ाइनर और फिल्म आलोचक भी थे। इनकी पहली फिल्म ‘पाथेर पांचाली’ (1995) ने ग्यारह अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते थे जिसमें कांस फिल्म महोत्सव का ‘सर्वश्रेष्ठ ह्यूमन डॉक्यूमेंट्री’ पुरस्कार भी शामिल है।

सभी चित्र: योगेश्वरी: स्वतंत्र रूप से चित्रकारी करती हैं। साथ ही, म्यूरल और पोर्ट्रेट भी बनाती हैं। शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट से कला में डिप्लोमा। वर्तमान में, अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर कर रही हैं।